विष्णु प्रभाकर की 'सीमा रेखा' एकांकी में राष्ट्रीयता

- डॉ. लूनेश कुमार वर्मा

शोध सार

'सीमा रेखा' एकांकी में राष्ट्रीयता की प्रधानता है। आधुनिक युग में समय को दृष्टि में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि समय सापेक्ष नाटक की अपेक्षा एकांकी अधिक सफल है। रेडियो के लिए छोटे नाटक लिखने वालों ने थोड़ा फेरबदल करके उन्हें मनचाही एकांकियों के रूप में प्रकाशित किया है। इससे एकांकी नाटक और रेडियो नाटक पर्याय मान लिए गए हैं। विष्णु प्रभाकर के जीवन में आर्य समाज और गांधीजी के कारण उनमें स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना का संचार हुआ। उनका अटूट विश्वास भारतीय संस्कृति और परंपरा पर था। विष्णु प्रभाकर ने 'सीमा रेखा' एकांकी में आदर्शवाद और कुटिल राजनीति के द्वंद्व को एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों के विचार-भिन्नता के कारण उत्पन्न टकराव को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। शासक जनता के प्रतिनिधि होते हैं। मूल शक्ति जनता के हाथ में होती है। यह इस एकांकी के माध्यम से सिद्ध किया गया है। लोकतंत्र में जनता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसके और सरकार के बीच कोई रेखा नहीं होनी चाहिए।

मुख्य शब्द- राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम, संवेदनशीलता, लोकतंत्र, आदर्शवाद।

'सीमा रेखा' एकांकी विष्णु प्रभाकर की चर्चित कृति है। इसमें राष्ट्रीयता की प्रधानता है। उन्होंने एकांकी, नाटक, कहानी, उपन्यास, रिपोर्ताज आदि विधाओं में भी रचनाएँ की हैं। बंगला उपन्यासकार शरतचंद्र के जीवन पर आधारित जीवनी 'आवारा मसीहा' से विष्णु प्रभाकर को विशेष प्रसिद्धि मिली।

भारतेंदु हरिश्चंद्र कालीन परंपरा से विकसित ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, काल्पनिक कथानक के आधार पर आधुनिक काल में एकांकी रचना की जा रही है। इसकी अभिव्यंजना और शैली पर पाश्चात्य प्रभाव देखा जा सकता है। "आज हिंदी साहित्य में एकांकी का विकास चरम सीमा पर पहुँच गया है। अनेक प्रकार के एकांकियों की रचना विभिन्न शैलियों में हो रही है।"[1] आधुनिक युग में समय को दृष्टि में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि समय सापेक्ष नाटक की अपेक्षा एकांकी अधिक सफल है। "रेडियो नाटक मंचीय नाटकों से अनेक अर्थ में भिन्न हैं। रेडियो नाटककार के पास और उसे रेडियो पर प्रस्तुत करने वालों के पास ध्वनि और शब्द ही वे साधन हैं, जिनसे वे उसे श्रोताओं तक संप्रेषित करते हैं। इस दृष्टि से रेडियो नाटक दृश्य काव्य न रहकर श्रव्य काव्य बन गया है। रेडियो के लिए छोटे नाटक लिखने वालों ने थोड़ा फेरबदल करके उन्हें मनचाही एकांकियों के रूप में प्रकाशित किया है। इससे एकांकी नाटक और रेडियो नाटक पर्याय मान लिए गए हैं। उसका अर्थ विकास यहाँ तक किया गया कि उसमें झलकी, फैंटेसी, संगीत रूपक आदि को भी शामिल कर लिया

गया।"[2] विष्णु प्रभाकर के जीवन में आर्य समाज और गांधीजी का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। इनके कारण उनमें स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना का संचार हुआ।

राष्ट्रीयता पर आधारित रचना कर्म में संलग्न रहने के कारण विष्णु प्रभाकर को अपनी सरकारी नौकरी छोड़नी पड़ी। नौकरी न रहने पर भी ये स्वतंत्र लेखन में संलग्न रहे। स्वतंत्रता के पश्चात के बाद ये आकाशवाणी दिल्ली में कार्य करते हुए इन्हें रेडियो रूपक लिखने की प्रेरणा मिली। विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में गांधीवादी राष्ट्रीयता सहज परिलक्षित होती है। उनकी रचनाओं में करुणा और मानवता को विशेष स्थान दिया गया है।

विष्णु प्रभाकर का अटूट विश्वास भारतीय संस्कृति और परंपरा पर था। गोविंद त्रिगुणायत उन्हें युग प्रतिनिधि मानते हुए कहते हैं- "उनके नाटक सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विविध विषयों पर हैं। उनके एकांकी सही मानी में अपने युग की संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। उनकी कला और अभिव्यक्ति रेडियो टेकनीक की आश्रित अधिक है।"[3] वे सामाजिक पारिवारिक व मानवीय मूल्यों की स्थापना साहित्य के माध्यम से करने में विश्वास रखते थे। समाज में मूल्यों के विघटन को देखकर अपनी चिंता व विरोध को अपने साहित्य में पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करते थे।

एकांकी का विकास नाटक के पश्चात हुआ है। इस दृष्टि से एकांकी को हिंदी गद्य की नई विधा कहा जा सकता है। "एकांकी विधा की उपयोगिता रेडियो का प्रचार होने के बाद और बढ़ी, क्योंकि वहां निश्चित समय में ही संवाद और ध्वनि द्वारा नाटक पूरा कर देना होता है।"[4] एकांकी नाटक की अपेक्षा लघु काय होते हैं। कम समय में अपने लक्ष्य की पूर्ति करने और प्रभाव छोड़ने के कारण यह शीघ्र ही लोकप्रिय व आकर्षक हुआ है। "प्रभाव और लक्ष्य की दृष्टि से भी कहा एकांकी नाटक अतिशय महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। नए युग के परिपेक्ष में एकांकी नाटक न केवल अपनी नई शैली बल्कि नई टेक्निक के लिए भी पर्याप्त आकर्षक बन पड़े हैं।"[5] नाटक और एकांकी में कथानक, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य विषयवस्तु और रंगमंचीयता अथवा अभिनेयता के तत्व होते हैं। नाटक में कथावस्तु के विस्तार की संभावनाएँ होती हैं, वहीं एकांकी में इसकी सीमा होती है। नाटक में पात्रों की बहुलता होती है किंतु एकांकी में अपेक्षाकृत कम पात्र होते हैं। नाटक में दृश्य की बहुलता होती है जबकि एकांकी में एक ही दृश्य होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारतीय संविधान लागू हुआ। "राष्ट्र में सभी व्यक्तियों को समान अधिकार साथ होते हैं और बंधुओं का भाव स्वत: जागृत हो जाता है। साहचर्य की भावना ही राष्ट्रीयता को जन्म देती है।"[6] प्रारंभ में आदर्शवाद की स्थिति रही किंतु समय के साथ लोकतंत्र की मूल भावना 'जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन' का उचित आदर व सम्मान नहीं रह गया। जनता के द्वारा चुने जाने वाले जनप्रतिनिधि स्वयं को शासक समझने लगे और ऐसी स्थिति में जनता के अधिकार सीमित होने लगे। इस स्थिति को देखकर

लेखक विष्णु प्रभाकर ने 'सीमा रेखा' एकांकी में आदर्शवाद और कुटिल राजनीति के द्वंद्व को एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों के विचार-भिन्नता के कारण उत्पन्न टकराव को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है।

एकांकी की कथावस्तु मर्मस्पर्शी है। एकांकी में घटित घटनाएँ सजीव विचारोत्तेजक गतिशील हैं। संपूर्ण कथानक एक ही कमरे में कुछ ही समय में घटित हुआ है। इस एकांकी में लोकतंत्र के विभिन्न वर्गों के व्यापार, मंत्री, नेता, पुलिस इंस्पेक्टर चार प्रतिनिधि के रूप में लक्ष्मीचंद, शरतचंद्र, सुभाषचंद्र और विजय इन चार भाइयों को प्रस्तुत किया है। उनमें विचार-भिन्नता के फलस्वरूप निर्मित द्वंद्व को कहानी का कथावस्तु बनाया गया है।

लक्ष्मीचंद का दस वर्षीय पुत्र अरविंद एक दिन बैंक के पास उग्र आंदोलनकारियों की भीड़ में पुलिस की गोली का शिकार हो जाता है। लक्ष्मीचंद और उसकी पत्नी इसे विजय की क्रूरता निरूपित करते हैं। आक्रोशित भीड़ अनियंत्रित होकर जब आगे बढ़ने लगती है, तब उसे रोकने के लिए विजय और सुभाष सामने आते हैं। भीड़ अनियंत्रित होकर आगे बढ़ती है। विजय गोली चलाने से मना करता है। भीड़ में शामिल असामाजिक तत्व के कारण विजय और सुभाष कुचलकर मर जाते हैं। लोकतंत्र में शासक व जनता के बीच कोई 'सीमा रेखा' नहीं होती है। "जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती..."[7] शासक जनता के प्रतिनिधि होते हैं। मूल शक्ति जनता के हाथ में होती है। यह इस एकांकी के माध्यम से सिद्ध किया गया है।

इस एकांकी में 'सविता' का चरित्र दृढ़ता से उन्होंने स्वस्थ लोकतंत्र के रूप में प्रस्तुत किया है। जनचेतना की प्रखर अभिव्यक्ति सविता करती है। लोकतंत्र में जन आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य संपादित नहीं होता है, तब जनता विद्रोह करने के लिए विवश हो जाती है। सविता प्रखरता से प्रश्न उपस्थित करती है कि जनता की इन भावनाओं की उत्पत्ति का कारण क्या है? क्या यह शासन को जानना नहीं चाहिए? सविता दृढ़ता से व्यंग्यात्मक ढंग से अपनी बात रखने के लिए जानी जाती है। वह कहती है कि जनता के हित के लिए जो नेता पहले गोलियाँ खाते थे, क्या वे अब जनता से सुरक्षा के लिए पुलिस की गाड़ी में ही कहीं आ जा सकते हैं? सविता लोकतंत्र के जन नेताओं को उनके कर्तव्य बोध कराने में बिल्कुल नहीं हिचकती है।

लोकतंत्र में लोक ही सर्वोपरि होता है यहाँ शासक कोई नहीं होता है सब लोग के सेवक ही होते हैं। लोकतंत्र में सब समान है किंतु जिन पर उत्तरदायित्व होता है, उनका दायित्व भी अधिक होता है। वह कहती है- "बेशक, सब समान हैं। दादाजी, पर जिनपर व्यवस्था और न्याय की जिम्मेदारी है, उनका दायित्व अधिक है।"[8] सविता निर्भीक होकर अपनी बातें कहती हैं। बातें चाहे जनता की हो नेता की हो या शासकीय सेवकों की, वह बड़ी निर्भीकता से अपनी बातें तर्कपूर्ण ढंग से रखती हैं। सविता तत्परता

से निर्णय लेने में समर्थ महिला है। वह भलीभांति समझती है कि कौन सा समय बहस करने का है और कौन सा समय कार्य संपादित करने का।

देश में स्थापित लोकतंत्र के स्वरूप में समय के साथ विसंगतियाँ परिलक्षित हो रही है। राष्ट्रीय हित की अनदेखी की जा रही है, फलत: हिंसक प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। लोगों में राष्ट्रीयता का अभाव हो रहा है। राष्ट्र की संपत्ति को लोग क्षति पहुँचाने में संलग्न हो रहे हैं। राष्ट्रहित से जुड़ी हुई इस समस्या को इस एकांकी में लेखक ने प्रमुखता से उजागर किया है।

शिल्प की दृष्टि से यह एकांकी रेडियो रूपक के अंतर्गत आता है, किंतु रंगमंच पर भी इसका सफलतापूर्वक मंचन किया जा सकता है। 'सीमा रेखा' एकांकी की भाषा सहज, सरल और सुबोध है। भाषा में तीव्रता होने के कारण वे पाठकों को अनायास अपनी ओर खींच लेते हैं। मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जीवन अनुभवों से संपृक्त कर प्रभावपूर्ण रीति से व्यक्त करना विष्णु प्रभाकर की विशेषता है।

इस एकांकी के विभिन्न पात्र अलग-अलग वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। सबके स्वार्थ अलग हैं, दृष्टिकोण और कर्तव्य भी। विभिन्न लोगों के विभिन्न विचारों में समन्वय न होना लोकतंत्र में विडंबना ही कहा जा सकता है। इसी विडंबना के कारण हिंसक घटनाएँ घटित होती हैं। कुछ लोगों की नृशंस हत्या भी हो जाती है। इस एकांकी के प्रमुख पात्र चार भाई हैं। उनके अपने-अपने स्वार्थ हैं। उनका अपना-अपना दृष्टिकोण है। उनके कर्तव्य एक दूसरे से भिन्न और प्रतिकूल प्रतीत होते हैं। अतः उन्होंने संघर्ष की स्थिति निर्मित हो जाती है। फलत: अरविंद, विजय और सुभाष की अनपेक्षित हत्या हो जाती है। सविता इसे परिवार की अपेक्षा देश की क्षति निरूपित करती हुई अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करती है कि जनतंत्र में जनता और सरकार के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती है।

'सीमा रेखा' एकांकी में लेखक की अन्वेषणात्मक दृष्टि का परिचय मिलता है। वे लंबे समय तक रंगमंच व आकाशवाणी में सेवा देते रहे। इसलिए इनके नाटकों में रंगमंच की सूक्ष्मताओं का समावेश है। "साहित्य की दृष्टि से नाटक की श्रेष्ठता इस बात में है कि वह कितनी जटिल मानवीय स्थितियों, द्वंद्वों, मन की सूक्ष्म परतों और आवेगमय मार्मिकता को उभार पाता है। जो नाटक जिस हद तक ऐसा कर पाता है उसमें अभिनय की संभावनाएँ भी उतनी ही अधिक निहित होती हैं- क्योंकि जटिल स्थितियों और चरित्रों और उनके सूक्ष्म अंतर्द्वंदों को संप्रेषित कर पाने में ही अभिनय की उत्कृष्टता सिद्ध होती है।"[9] उनकी रचनाओं में वैयक्तिकता की अपेक्षा सामाजिकता व राष्ट्रवादिता की भावना की प्रधानता रही है।

सीमा रेखा एकांकी रेडियो रूपक है। फिर भी यह रंगमंचीय गुणों से युक्त है। अनेक स्थानों पर इसका मंचन भी किया जा चुका है।

इस एकांकी में राष्ट्रीयता का उद्घाटन नई संवेदना के साथ हुआ है। सविता का चरित्र स्वस्थ लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करता है। जनतंत्र में जनता व शासन के मध्य कोई विभाजक रेखा नहीं होती है यह इस इलाके के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान परिपेक्ष में राजनैतिक स्वार्थों के चलते जो दूषित वातावरण निर्मित हो गया है उसे स्वस्थ दृष्टि इस नाटक से मिल सकती है।

निष्कर्ष

हिंदी एकांकीकारों में विष्णु प्रभाकर का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। "विष्णु प्रभाकर हिंदी में नाटक के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा संपन्न रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।"[10] ध्वनि नाटक के क्षेत्र में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। वे साहित्य में दृश्य श्रव्य साधन को अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम मानते थे। राष्ट्रीयता के महत्वपूर्ण पक्ष का उद्घाटन नवीन सवेंदना के साथ 'सीमा रेखा' एकांकी में विष्णु प्रभाकर ने किया है। इस एकांकी में लोकतंत्र में शासन की 'सीमा रेखा' पर प्रकाश डाला गया है। लोकतंत्र में जनता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसके और सरकार के बीच कोई रेखा नहीं होनी चाहिए। इस एकांकी का विषय वस्तु भारत के वर्तमान परिदृश्य का सार्थक प्रतिनिधित्व करता हुआ महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया है।

संदर्भ-

1. चातक एवं शर्मा, राजकुमार. हिंदी साहित्य का इतिहास. जयपुर : कॉलेज बुक डिपो, पृष्ठ 433.
2. नगेंद्र एवं हरदयाल. हिंदी साहित्य का इतिहास. इंदिरापुरम : मयूर पेपरबैक्स, संस्करण : 2015, पृष्ठ 682.
3. चातक एवं शर्मा, राजकुमार. हिंदी साहित्य का इतिहास. जयपुर : कॉलेज बुक डिपो, पृष्ठ 436-437.
4. त्रिपाठी, विश्वनाथ. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास. नई दिल्ली : ओरियंट लोंग्मैन प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण : 2007, पृष्ठ 143.
5. चातक एवं शर्मा, राजकुमार. हिंदी साहित्य का इतिहास, जयपुर : कॉलेज बुक डिपो, पृष्ठ 438.
6. विमलेश. हिंदी साहित्य के विविध आयाम. कानपुर : साहित्य निलय प्रकाशन, संस्करण : 2013, पृष्ठ 168.
7. विष्णु प्रभाकर. पल्लव भाग 1. नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, संस्करण : 2000, पृष्ठ 80.
8. वही पृष्ठ 70.
9. आचार्य नंदकिशोर. नाट्यानुभव. बीकानेर : वाग्देवी प्रकाशन, संस्करण : 2004, पृष्ठ 69.

10. विष्णु प्रभाकर. राष्ट्रीय एकता और हिंदी. नई दिल्ली : जगत राम एंड संस, संस्करण : 2008, आवरण पृष्ठ.

डॉ. लूनेश कुमार वर्मा (व्याख्याता)

म.नं. 3349 वार्ड 61, काजल किराना के पास, शुक्ल वंशम के पीछे रावतपुरा कालोनी फेस- 01, मठपुरैना. पोस्ट- सुंदर नगर, तह- जिला- रायपुर (छत्तीसगढ़) पिन 492001

ई मेल luneshverma@gmail.com, मोबाइल नंबर 8109249517